

(11)

## हमारी मुट्ठी में आकाश सारा

हमारी ही मुट्ठी में आकाश सारा  
जब भी खुलेगी चमकेगा तारा।  
कभी न ढले जो, वो ही सितारा  
दिशा जिससे पहचाने संसार सारा ।

हथेली पे रेखाएँ हैं सब अधूरी  
किसने लिखी हैं, नहीं जानना है।  
सुलझाने उनको, ना आएगा कोई, समझना है  
उनको ये अपना करम है।  
अपने करम से दिखाना है सबको  
खुदका पनपना, उभरना है खुदको।  
अँधेरा मिटाए जो नहा शरारा  
दिशा जिससे पहचाने संसार सारा

हमारे पीछे कोई आए ना आए  
हमें ही तो पहले पहुँचना वहाँ है।  
जिन पर है चलना नई पीढ़ियों को  
उन्हीं रास्तों को बनाना हमें है।  
जो भी साथ आएँ उन्हें साथ ले लें  
अगर ना कोई साथ दे तो अकेले।  
सुलगा के खुद को मिटा ले अँधेरा  
दिशा जिससे पहचाने संसार सारा।